DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Barachakia
BRABU – Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part – III
Sub. – SANSKRIT
Paper – VII
Short Notes

5×4 = 20 Marks
[redacted]

## अलङ्कारों के सोदाहरण लक्षण –

### 10. व्यतिरेक अलङ्कार

व्यतिरेक अलङ्कार का लक्षण बताते हुए आचार्य मम्मट ने लिखा है — "उपमानादन्यस्य व्यतिरेकः स एव सः।" अर्थात् जहाँ उपमान की अपेक्षा उपमेय में गुणाधिक्य वर्णन हो, वहाँ व्यतिरेक अलङ्कार होता है। यथा —

" चन्द्रं गता पद्मगुणान्न भुङ्क्ते पद्माश्रिता चान्द्रमसीमभिख्याम्
उमामुखं तु प्रतिपद्य लोला द्विसंश्रयां प्रीतिमवाप लक्ष्मीः॥"
(कु० 1/43)

कुमारसम्भव के प्रथम सर्ग में पार्वती के मुखवर्णन के प्रसङ्ग में कविवर कालिदास ने यह पद्य लिखा है। चञ्चल लक्ष्मी रात में चन्द्राश्रित होने पर कमल के सौरभ आदि गुणों से वंचित रहती है और दिन में पद्माश्रित होने पर चन्द्रमा की शोभा का उपयोग नहीं कर पाती, किन्तु पार्वती के मुख को प्राप्तकर उसे दोनों जगह चन्द्रमा एवं कमल के निवास करने का सुख मिल गया। इसका अभिप्राय यह है कि चन्द्रमा में केवल चन्द्रिका की शीतलता गुण है, सौरभ आदि नहीं, इसी प्रकार कमल में भी केवल सौरभमात्र है, चन्द्रिका की आह्लादकता नहीं, किन्तु उमा के मुख में ये दोनों गुण हैं। अतः उमा का मुख इन दोनों से विलक्षण है। यहाँ उपमान चन्द्रमा और कमल की अपेक्षा उपमेय उमा के मुख में अधिक गुणों का उत्कर्ष दिखाया गया है अतः यहाँ पर व्यतिरेकालङ्कार है।

—— 0 ——

क्रमशः जारी